पीड़ा उसकी आँखों से टपक रही थी। उसने फिर कहना शुरू किया—

''मैंने कहा, 'किसी से किस्तों पर ले आओ। एकबारगी देना तो मुश्किल होगा। वो परेवाली बीबीजी कह भी रही थीं कि वो अपना पुराना टी.वी. निकालना चाहती हैं।' पर वो बोला, 'पैसा एक नहीं दूँगा।'···बस, ऐसे ही बात बढ़ गई और उसने पास पड़ी फट्टी मेरे माथे पर दे मारी। मेरे तो बीबीजी, एकदम होश उड़ गए। आँखों के सामने अँधेरा छा गया। शायद मैं कुछ देर तक बेहोश भी पड़ी रही। फिर खुद ही किसी को बुलाकर लाया और मेरी पट्टी करवाई। अब ऐसी हैं आज की औलाद! दोनों छोटे भी तो कल यही करेंगे!''

सुनंदा सुभद्रा की बात पर अवाक् थी। बोली, ''जब तुम्हारे दोनों बड़े लड़के ब्याहे जा चुके हैं और तीसरा भी जल्दी ही कमाने लायक हो जाएगा, तब तुम छोटे बच्चे को लेकर कहीं बैठ क्यों नहीं जातीं? अभी तो ऐसी बड़ी भी नहीं लगती हो।''

''बस, बच्चे पर ही तो बात आकर रुकती है। एक बार किसी ने कहा भी था, पर बच्चे नहीं माने। एक बात और भी बीबीजी, मैं और बच्चे पैदा करने के झंझट में नहीं पड़ना चाहती।'' सुभद्रा के चेहरे पर अब एक प्रकार की अकुलाहट दौड़ने लगी थी, ''आगे-आगे अब बुढ़ापा ही तो आना है। ये बच्चे भी जब छोड़ जाएँगे तब पड़ी रहूँगी आप जैसे किसी के घर में।'' सुभद्रा के स्वर में अजीब बेचारगी थी।

सुभद्रा की इस बेचारगी ने सुनंदा को जैसे एक प्रकार की उलझन में डाल दिया था। क्या इस स्थिति का यही समाधान है? कहीं एक दिन सुभद्रा को अपनी झुग्गी के सामने भिखारिन बनकर तो नहीं बैठना पड़ेगा?

□

एच-२५९, डी.डी.ए. फ्लैट्स,
नारायणा विहार, नई दिल्ली-११००२८

कविताएँ

राहुल झा

शहर में ···

यहाँ सुख है
छाया के सदृश अर्थहीना···

उलझी हुई
मनस-गाँठें घनेरी हैं
सब गलियाँ अँधेरी हैं
आडंबरों की सहज तीखी आँच में पकती
मुसकानें हैं
शंभु धनु-सा टूटा हुआ व्यक्तित्व है···

मिटने की सीमा-रेखा पर
'कला' का मरण-गीत है
रागों की ठहरी गूँज है
आँसू के अनगिन मजार हैं···

सुंदर चीजें ही मिटती हैं सबसे पहले यहाँ
जैसे कि फूल, चाँदनी, रूप···टयार!

□

सुर्खियों में ···

जिनकी भावनाएँ वेश्या बन गई हैं
जिनकी दिलचस्पी
विस्फोट की रूह में है
जिनके पाँव के नाखून
धरती को लहूलुहान करते हैं···
जिनके चेहरे का रंग
मौसम के तेवर को भी झुठलाता है

जिनकी अश्लीलता में भी
कला और दर्शन का मर्म का ढूँढ़ा जाता है···
जो झूठे महोत्सव के
झूठे रंगों में
हठखेलियाँ (···!) कर रहे हैं···
वे,
सुर्खियों में हैं···

□

सुख

घूमती हुई चाक पर
मिट्टी का एक लोंदा···
जिसे दस दिशाओं की उँगलियाँ
देती हैं आकार
धीरे-धीरे···

□

तुम्हारी छुवन

तुम्हारी छुवन के
दिपदिपाते अर्थ में
झर रहा हूँ
हवा के रूह में
खुशबू की बारिश की तरह···

□

द्वारा—श्री अनिरुद्ध सिन्हा,
गुलजार पोखर,
मुंगेर-८११२०१